यूपी के लौंडों की सांस्कृतिक समझदारी बदल देगा लड़कियों का यह आंदोलन

बीएचयू के वीसी वही हैं जो कहते हैं, मेरे लिए बेटी वो है जिससे पूछा जाए कि उसके लिए उसका कैरियर महत्वपूर्ण है कि उसके भाई का? तो वो लड़की वो बोले मेरा नहीं, भाई का ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऐसे पितृसत्ता के पोषक प्रशासक लड़कियों के पक्ष में कोई बेहतर फैसला ले पाएंगे ऐसा कहना मुश्किल ही है....

अनुराग अनंत की रिपोर्ट

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी बीएचयू की पहचान बताती ये पंक्ति प्रसिद्ध रसायन शास्त्री और बीएचयू के छात्र रहे शांति स्वरूप भटनागर की कलम से निकली है। ये बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलगीत की पहली पंक्ति है और पहली पंक्ति से बीएचयू के प्रति प्रेम, विश्वास और आस्था का प्रबल प्रवाह दिखता है।

ये पंक्तियाँ बीएचयू की पहचान में सूक्ति वाक्य की तरह दोहराई जाती रही हैं। प्रसिद्ध सामाजिक और राजनीतिक चिंतक तुलसीराम बीएचयू को बीएचयू माई कहा करते थे। वही बीएचयू जो लाखों लोगों की स्मृतियों में सुखद अनुभूति और गर्व का पर्याय बनकर बसा हुआ है।

उसी बीएचयू के सिंहद्वार पर अनसेफ बीएचयू और बचेगी बेटी, तभी तो पड़ेगी बेटी का बड़ा सा बैनर टंगा है। बीएचयू की छात्राएं आंदोलित हैं और उन्होंने बीएचयू का सिंहद्वार घेर लिया है। नारे गूंज रहे हैं एक-दो-तीन-चार, नहीं सहेंगे अत्याचार, त्र.ष्ट. ङ्कष्ट बाहर आओ, वी वांट जस्टिस लड़कियां मुट्ठी बाँधकर हवा में लहराती हैं और लगता है जैसे सबने मजा का कहा मान के सिर के पल्लू को परचम कर लिया है। 22 सितम्बर, सुबह 6 बजे से ये मंजर बना हुआ है। बीएचयू में लड़कियां सुरक्षा के सवाल पर आंदोलित हैं और फिलहाल वो आर-पार की लड़ाई का मन बनाये हुए हैं।

छात्राओं के आंदोलन की क्या वजह है?

बीएचयू का ये महिला आंदोलन 21 सितम्बर शाम 7 बजे भारत कला भवन चौराहे पर दृश्य कला विभाग की बीए द्वितीय वर्ष की छात्र के साथ छेड़खानी के विरोध में है। छात्रा शाम सात बजे के करीब अपने हॉस्टल की तरफ जा रही थी, तभी पल्सर बाइक से आये तीन लड़कों ने उसके साथ छेड़खानी की और उसके जींस में हाथ डाल दिया।

वहां अँधेरा था इस वजह से लड़की बाइक का नंबर नहीं नोट कर सकी और न ही बाइक सवार लड़कों को पहचान सकी। वो बुरी तरह डर गयी थी और रोने लगी थी। घटनास्थल से कुछ ही दूरी पर गार्ड थे जिन्हें उस लड़की ने घटना के बारे में बताया, पर किसी भी तरह की फौरी मदद नहीं मुहैया कराई गयी। और कला भवन चौराहे से बामुश्किल 20 मीटर दूरी पर प्राक्टोरियल बोर्ड बैठा हुआ था, जब उनसे घटना के सम्बन्ध में बताया गया तो वो वहां प्रॉक्टर, सुरक्षा अधिकारी और गार्ड्स लड़की से ही उल्टा सवाल पूछने लगे तुम इतनी रात को क्यों घूम रही हो?

लड़की वहां से रोते हुए त्रिवेणी कॉम्प्लेक्स स्थित अपने छात्रावास पहुँची और अपनी साथियों से घटना के बारे में बताया। लड़की डरी हुई थी, रो-रोकर बुरा हाल था। वो अपनी बात कहते कहते बेहोश हो जा रही थी। लड़की की ये दशा देख कर छात्राएं आंदोलित हो गयीं। जिस पर वार्डन ने लड़कियों को समझाने की कोशिश की और अपनी सुरक्षा, अपनी इज्जत अपने हाथ और इज्जत का हवाला देकर बात को देखने समझने की सलाह दी, जिस पर लड़कियों में और गुस्सा बढ़ गया।

लड़कियां रात में ही वीसी से मिलना चाहतीं थी पर वार्डेन, प्रॉक्टर और वीसी ने मुद्दे की गंभीरता को नहीं समझा और सही समय पर कोई संवाद नहीं किया, जिससे लड़कियां अगली सुबह 6 बजे से ही सिंहद्वार पर इकठ्ठा होने लगीं और शुरुआत में त्रिवेणी कॉम्प्लेक्स और फिर महिला महाविद्यालय के छात्रावासों से लड़कियां वहां पहुँचने लगीं। सुबह दस बजे तक लगभग डेरे से दो हजार लड़कियां लंका गेट पर इकठ्ठा हो गयीं। आंदोलन को लड़कों का भी समर्थन मिला और बढ़ी संख्या में लड़कियां सुरक्षा के सवाल पर सिंहद्वार पर अभी तक डटी हुई हैं।

प्रधानमंत्री को आंदोलन के चलते रास्ता बदलना पड़ा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 और 23 सितंबर को बनारस दौरे पर हैं। उन्हें सिंहद्वार से ही होकर गुजरना था, जिसकी वजह से अफसरों के हाथ-पाँव फूल रहे थे। मालवीय जी की प्रतिमा सजाई गयी थी। रास्ते से रेहड़ी-पटरी वाले दुकानदारों को हटाया जा चुका था, पर अचानक महिलाओं के इस स्वत: स्फूर्त आंदोलन से प्रधानमंत्री के रास्ते में थोड़ा परिवर्तन करना पड़ा। पुलिस ने लड़कियों को चारों तरफ से घेर लिया और उन्हें विश्वविद्यालय के भीतर करके सड़क पर थोड़ी जगह बनाई और प्रधानमंत्री के रूट को थोडा-सा परिवर्तित करके प्रधानमंत्री का काफिला गुजार दिया गया।

विवादों से घिरा रहा है वीसी गिरीश चंद्र त्रिपाठी का कार्यकाल

बीएचयू के वीसी गिरीश चंद्र त्रिपाठी का कार्यकाल विवादों से घिरा रहा है। उनके ऊपर विश्वविद्यालय पर एक खास तरह की राजनीतिक समझ थोपने का आरोप लगता है। वो विश्वविद्यालय में एक ?स तरह की सांस्कृतिक परिवेश बनाना चाहते हैं, जिसकी जड़े पितृसत्ता, मनुवाद से पोषित होतीं हैं। प्रोफेसर त्रिपाठी के कार्यकाल काले अध्यायों की मोती किताब होता जा रहा है।

चाहे मामला परास्नातक की छात्र से बतात्कार का हो, परिसर में नाबालिग से यौन शोषण और बलात्कार का हो, 24 घंटे पुस्तकालय की मांग कर रहे छात्रों पर गंभीर मुकदमे करने और बर्बर दमन कराने का मामला हो, परिसर में छात्राओं पर पहरा बिठाने का मामला हो सारे मामलों में प्रोफेसर त्रिपाठी ने अपनी सामंती समझ और बोगस सोच का परिचय दिया है। उन्होंने परिसर में परचा बाँट रहे छात्रों पर लाठियां चलवाईं, महिलाओं के छात्रावासों के शाम में बंद होने का समय घटा दिया, रात आठ बजे के बाद छात्राओं से मोबाइल फोन जमा करने का निर्देश दिए, लड़कियों के हॉस्टल में नॉनवेज पर रोक लगा दी, क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे कामोत्तेजना बढ़ती है। ऐसे ही कई कारनामे प्रोफेसर त्रिपाठी के नाम दर्ज हैं।

बीएचयू में ये दिन आते आते आये हैं

छात्र-छात्राएं बतातीं हैं बीएचयू में घुटन होने लगी है। लड़कियां यहाँ एकदम सुरक्षित नहीं हैं। उनके भीतर भीषण दर का माहौल है। ये स्थिति बनते बनते बनी है और इसके जिम्मेदार प्रोफेसर त्रिपाठी और उनकी दकियानूसी सोच है।

ऐसे में प्रोफेसर त्रिपाठी का राजदीप सरदेसाई के लिए दिया गया बयान सभी को याद होगा, राजदीप को आने दीजिये, मैं उन्हें कैंपस में लड़कों से पिटवाऊंगा ये पीटने वाले लड़के कौन हैं जाहिर है वीसी की आपराधिक और शोहदे किस्म के लड़कों को सह है और वो उनके एक इशारे पे कुछ भी कर सकते हैं और वीसी उन्हें बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

वीसी ने बीएचयू में एक आपराधिक गठजोड़ रचा है शायद इसीलिए वो अभी तक लड़कियों से बात नहीं करने आ रहे हैं। प्रोफेसर त्रिपाठी ने नवम्बर 2015 में इग्नू स्थापना दिवस समारोह के मंच से बयान दिया दिया था कि शोध छात्र फेलोशिप के पैसे से बाइक खरीदते हैं और लड़कियां दहेज के लिए पैसा इकठ्ठा करती हैं। ये उनकी ओछी समझ और छात्र विरोधी नजरिये को दिखाती है। मार्च 2017 में महिला महाविद्यालय बीएचयू में उन्होंने कहा कि मेरे लिए बेटी वो है जिससे पूछा जाए कि उसके लिए उसका कैरियर महत्वपूर्ण है कि उसके भाई का? तो वो लड़की वो मेरा नहीं, भाई का ज्यादा महत्वपूर्ण है। ये बयान वीसी साहब के

कुलपति त्रिपाठी आरएसएस गुंडा गैंग के नेता

देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय बीएचयू में जिस तरह छात्राओं ने निर्भिक तरीके से अपनी सुरक्षा और आत्मसम्मान के लिए आवाज़ उठाई है। यह पूरी देश की लड़कियों के लिये प्रेरणा है। 21 सितम्बर की शाम 6.20 पर कुछ लड़कों ने विश्वविद्यालय कैंपस के भीतर एक लड़की से छेड़छाड़ किया, उसकी ठीक कुछ दूरी पर गार्ड खड़ा था, लेकिन वह आवाज देने पर भी नहीं आया। बाद में कहा कि 6 बजे के बाद हॉस्टल से मत निकलो। फ़िर दोबारा छात्रा गार्ड के पास गई तो उसने कहा बस छुआ ही तो है और किसी तरह की कार्रवाई करने की जगह उसका ऐसा कहना बेहद शर्मनाक है। वो भी तब, जब छात्राओं की सुरक्षा उनकी जिम्मेवारी है।

फ़िर इसके बाद छात्रायें प्रॉक्टोरियल वोर्ड के सदस्य से शिकायत करने पर उन्होंने कहा कि लिखित में शिकायत दर्ज करो। बीते काफ़ी समय से इन छात्राओं को इस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इन छात्राओं ने कितनी दफ़ा प्रशासन से शिकायत की पर कोई समाधान नहीं निकला। इतना ही नहीं छात्राओं ने खुद अपनी बयान में कहा कि, हॉस्टल को जेल की तरह बनाया जा रहा है वह क्या खाए, क्या पहनें, कब बाहर जायें ये निर्णय उन पर थोपा जा रहा है। छेड़खानी तो हुई पर इतने दिनों से हो रहे भेदभाव और चुप्पी के बाद उनका आक्रोश फुटा। छात्राओं ने बड़े शांतिपूर्ण तरीके से पहले सिंह द्वार और फ़िर कुलपति प्रो. त्रिपाठी के आवास के बाहर प्रर्दशन किया। क्योंकि यह घटना एक दिन का नहीं बल्कि रोज़ का है।

बीएचयू की सुरक्षा व्यवस्था इतनी ढीली है कि वो कैंपस के भीतर लड़कों को नहीं पकड़ पाए। इस पर आन्दोलन की मांग स्पष्ट व वाजिब थी। कैंपस में सीसी टीवी कैमरे व रोशनी अतिरिक्त गार्ड और उन्मुक्त वातावरण जिससे उन्हें दिन हो या रात वे भयमुक्त होकर बाहर निकल सकें। आवाज उठाने पर इन छात्राओं पर पुरूष पुलिसकर्मियों द्वारा बर्रबर लाठीचार्ज किया गया, वह भी हॉस्टल के भीतर घुसकर।

नरेन्द्र मोदी 22-23 सितम्बर को बनारस दौरे पर थे। आन्दोलन के चलते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रास्ता बदलना पड़ा और मीडिया से कहना पड़ा कि इस खबर को दबाओ।

बीएचयू के कुलपति गिरीश चंद्र त्रिपाठी घृणीत संकोच वाला का शर्मनाक बयान है कि लड़के हैं तो छेड़ेंगे ही। जब इन कुलपति की सोच इतनी घटिया है तो फ़िर ऐसा पद उन्हें क्यों? इन लड़कियों के अभिभावक आखिर किस सोच के तहत अपनी बेटियों का नामांकन वहां करायेंगे? कुलपति में शिक्षकत्व पद कहीं नहीं दिख रहा है। इन छात्राओं की जगह कहीं इन कुलपति की अपनी बेटी होती तो इतनी बेशर्मी से कभी कहते, कि लड़के हैं तो छेड़ेंगे ही?

इससे बीएचयू की प्रतिष्ठा धुमिल हुई है। शिक्षक समाज का निर्माता अंग है ऐसा कुलपति अपने छात्रों को क्या शिक्षा देगा। विश्वविद्यालय व्यक्ति के चारित्रिक और बौद्धिक व्यक्तित्व के विकास का केन्द्र है ना कि पढे-लिखे दुष्चरित्र और गुन्डों पैदा करने का अड्डे? इसका मतलब तो यही है कि कुलपति इन गुंडों का गैंगमास्टर है।

कुलपति त्रिपाठी ने छात्राओं की सुरक्षा उपलब्ध करवाने की मांग पर लाठीचार्ज करवाकर बीएचयू की प्रतिष्ठा पर कालिख पोतने का एतिहासिक कार्य किया है। कुलपति की ऐसी घृणित कार्य से बीएचयू और सारे देश के विश्वविद्यालयों की गरिमा धूमिल हुई है। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे व्यक्ति कुलपति की कुर्सी पर विराजमान हैं। रिपोर्ट के मुताबिक बीएचयू प्रशासन की गलती सामने आई है इस घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए कुलपति को अपने पद से इस्तीफ़ा दे देना चाहिये। बहरहाल बीएचयू जैसी स्थिति पूरे देश की है, पर यहां की छात्राओं ने हिम्मत और निडरता से पूरी देश की लड़कियों को प्रेरणा दी है। ये देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक बीएचयू है। यहां की छात्रायें बिना डरे और थमे अपनी माग रखना जानती है चाहे इनपर लाठी बरसाई जाय या गोली, ऐसी ही युवा शक्ति देश के हालातों को बदलेगी और ये भेड़ियें तो घुमते रहेंगे। यही छात्रायें मशाल जलायेंगी। ये छात्राओं की आवाज़ साहस, संकल्प हमें भी ऊर्जा दे रही है।

-दीपिका झा

मज़दूर मोर्चा का 16-30 सितम्बर अंक

गतांक की चीर -फ़ाड़

मज़दूर मोर्चा के 16-30 सितम्बर 2012 के अंक में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं। लेख 'राजनीतिक बेशर्मी की इन्तहा-हत्यारे बलात्कारी बाबा से समर्थन लेती रहेगी खट्टर सरकार' से स्पष्ट है कि भाजपा अपने राजनीतिक मन्सूबों को पूरा करने के लिये हर तरह के नैतिक व अनैतिक हथकंडों को अपननाने के लिये तैयार है। खेल मंत्री अनिल विज ने सच्चा सौदा डेरा के राम रहीम को दिए 50 लाख रुपये को न्यायोचित ठहराने का प्रयास किया तथा हरियाणा सरकार से मांग की कि पंचकूला में 25 अगस्त को पुलिस कार्यवाई में मारे गए डेरा समर्थकों को मुआवज़ा दिया जाय और इस मांग का समर्थन हरियाणा के एक अन्य मंत्री कम्बोज ने भी किया। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की भी सहानुभूति इस मांग के प्रति है। बलात्कारी, भ्रष्टाचारी व व्यवसायी बाबा राम-रहीम व उपद्रवी डेरा प्रेमियों का साथ देने से भाजपा का असली चाल व चरित्र वाला चेहरा बेनकाब हो गया है।

लेख 'जेएनयू में छात्र संघ की जीत के मायने' में जेएनयू छात्र संघ चुनाव में वामपंथी उम्मीदवारों की भारी जीत और एबीवीपी उम्मीदवारों की पराजय तथा उनको मिले मत प्रतिशत के संदर्भ में सटीक व निष्पक्ष विश्लेषण किया गया है। इस चुनाव में वामपंथी संगठनों को एबीवीपी, आरएसएस, सरकार व प्रशासन के गठजोड़ से मुकाबला करना पड़ा था। इसी संबंध में एक अन्य लेख 'एस्टूडेंट यूनियन के बदलते आयाम' में विश्वविद्यालयों के छात्र संघों के चुनाव, छात्र और राजनीति, शिक्षा व रोजगार आदि पक्षों की चर्चा की गई है। जेएनयू, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान आदि विश्वविद्यालयों में छात्र संघों के चुनावों के परिणाम से स्पष्ट है कि एबीवीपी के प्रति छात्रों के समर्थन में कमी आई है जो इस बात का द्योतक है कि युवा वर्ग में मोदी सरकार के प्रति भ्रम टुट रहा है।

'बुनियादी मुद्दों पर चर्चा क्यों नहीं होती?' पेट्रोल की कीमतें बढती जा रही हैं, बच्चे अस्पताल में मर रहे हैं, हम हिंदू-मुसलमान में उलझे हैं' लेख में मोदी सरकार की स्वास्थ्य नीति, अस्पतालों की दुर्दशा, पेट्रोल व डीजल के जरिए सरकार द्वारा आम आदमी से लूट, महंगाई , दवाइयों के अभाव में मरीज़ों की मृत्यु आदि का उचित मुल्यांकन किया गया है। ठीक ही लिखा है कि इन जन समस्याओं पर चर्चा करने की बजाए तथा जनता का ध्यान बांटने के लिये मीडिया में हिंदू-मुसलमान, राष्ट्रवाद, विकास आदि की बातें की जाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं चर्चा का एजेंडा तय करते हैं और वह इस मामले में माहिर है जो समय समय पर एजेंडा बदलने में देर नहीं लगाते।

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की थी कि चुनाव में भाजपा के जीतते ही भाजपा सरकार किसानों का कर्ज़ माफ़ करेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भाजपा सरकार किसानों के कर्ज़माफ़ी के प्रमाण पत्र आयोजित समारोहों में किसानों को दे रही है। परन्तु कर्ज़माफ़ी के नाम पर किसानों का जो मजाक बनाया गया है उसका प्रमाणिक विवरण लेख 'किसानों को कर्ज़माफ़ी के नाम पर बेइज्जत कर रही योगी सरकार' में किया गया है। किसी किसान का कर्जा 9 पैसा माफ़ हुआ है तो किसी किसान का 10 रुपया 37 पैसा। इस बात को कोई पूछने वाला नहीं कि क्या प्रधानमंत्री मोदी ने इसी प्रकार की कर्जमाफ़ी की घोषणा की थी।

रेयान इन्टरनेशनल स्कूल, गुड़गांव में सात साल के मासूम छात्र प्रद्युमन की हत्या के बाद उभरे जन आक्रोश के सामने हरियाणा सरकार को मज़बूर होकर कुछ कदम उठाने पड़े । आरोपी के परिवार के अनुसार आरोपी कन्डैक्टर अशोक को किसी अन्य को बचाने के लिये बली का बकरा बनाया गया है और इसकेलिये एक गहरी साजिश रखी गई है। किसी और का दोष अशोक के ऊपर डालो जा रहा है। अन्य प्राइवेट स्कूलों की दशा भी लगभग ऐसी ही है जहां छात्रों की हत्या व यौन शोषण के मामले सामने आ रहे हैं। प्राइवेट स्कूलों के साथ-साथ सरकारी स्कूलों का भी यही हाल है जिसकी चर्चा लेख 'रेयान स्कूल में सभी कुछ तो उल्टा-पुल्टा है' में किया गया है। वास्तव में इस दुर्दशा का कारण केन्द्र व राज्यों की सरकार की शिक्षा नीति व स्कूलों के प्रति उनकी उदासीनता है।

पत्रकार राणा अय्युब की पुस्तक 'गुजरात फ़ाइल्स' के हिंदी संस्करण का विमोचन दिल्ली के प्रेस क्लब में हुआ। इस पुस्तक में 2002 के गुजरात दंगों, भाजपा के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा गुजरात के तत्कालीन मंत्री अमित शाह व आईपीएस अफ़सर गुजरात के तत्कालीन अतिरिक्त डीजीपी राजन प्रियदर्शी के बीच बातचीत का खुलासा लेख 'अमित शाह ने दिया था सीधे गोली मारने का आदेश' में किया गया है। इससे स्पष्ट है कि 2002 का गुजरात दंगा वहां की तत्कालीन भाजपा की मोदी सरकार द्वारा प्रायोजित था और तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा अमित शाह मुसलमानों के कत्ल के लिये जिम्मेदार थे। मोदी व शाह का मीडिया पर इतना आतंक व डर छाया हुआ है कि किसी भी चैनल तथा राष्ट्रीय समाचार पत्र का साहस नहीं हुआ कि इस पुस्तक के विमोचन व सारांश पर चर्चा करे तथा प्रकाशित करे। लेकिन मज़दूर मोर्चा में इसके प्रकाशित होने से पाठकों को गुजरात दंगों व मोदी तथा अमित शाह की भूमिका के बारे में पाठकों को जानकारी मिल सकेगी।

इस अंक में प्रकाशित अन्य सभी लेख महत्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय है। किताब 'गुजरात फ़ाईल्स' का सारांश मज़दूर मोर्चा में प्रकाशित होने से मज़दूर मोर्चा की निर्भीक, निष्पक्ष व साहसिक पत्रकारिता की छवि और उभरकर पाठकों के सामने आई है।

- डॉ. जुगल किशोर गुप्ता